'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९३ | वाराणसी, मंगलवार, १८ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

गुलमर्ग (कश्मीर) १८-७-'५९

एक विश्व बनने के लिए तीन बातें जरूरी

[गुलमर्ग में श्री जे० एच० स्मिथ और ए० के० मुकर्जी के साथ पू० बाबा की 'दि न्यू वर्ल्ड यूनियन' के बारे में महत्त्वपूर्ण चर्चा हुई, जिसका सारांश निम्नलिखित है।—सं०]

विनोबाजी : आपका विचार अच्छा है, खासकर आपने मारल, रिलिजिअस एण्ड इण्टेलेक्च्युअल (नैतिक, धार्मिक एवं बौद्धिक) को एक बाजू रखकर उसमें और स्पिरिच्युअल (आध्यात्मिक) में जो फर्क किया है, उसे मैं पसन्द करता हूँ। नैतिक, बौद्धिक और धार्मिक—ये तीनों 'नेरो' (संकुचित) बन गये हैं। रिलिजियस (धार्मिक) कहने से कई संकुचित विचार आ जाते हैं। मारल (नैतिक) कहने से रिलेटिव एथिक्स (सापेक्ष नीतिशास्त्र) आ जाता है। आज का एथिक्स 'हेमलेट' है। टु डु ऐन्ड ह्वाट नाट टु डु इज ए परमानंट क्वेश्चन। (क्या करना और क्या नहीं करना, यह एक स्थायी प्रश्न है) इन्टेलेक्च्युअल (बौद्धिक क्षेत्र) में बुद्धि हवा में ऊँची उड़ती है और जो उड़ती है, वह गिरती भी है! इट इज विदाउट एक्सपिरिएन्स (उसमें अनुभव नहीं रहता)। इसलिए आपने इन तीनों से स्पिरिच्युअल को अलग किया है, यह अच्छा विचार है।

किसीको सदस्य न बनायें

आप जो चाहते हैं, उसके अमल के लिए दुनिया में विंडेड स्पिरिट्स के साथ चर्चा होना जरूरी है। बाकायदा किसीको मेंबर न बनाया जाय। जो विचार मान्य करते हैं, उनका नाम अपने पास रहे, परन्तु एक रेग्यूलर मेंबरशिप (नियमित सदस्यता) मत बनाइये। उसे बनायेंगे तो आगे जाकर उसमें से सेक्टरिएनिज्म (पांथिकता) पैदा होने की संभावना है, जिसे आप टालना चाहते हैं। क्योंकि आपका एक ब्राड विजन (व्यापक दृष्टिकोण) है, इसलिए मान लीजिये कि सारी दुनिया में उसके ५०० मेंबर हों और हिन्दुस्तान में १० हों तो हिन्दुस्तान में जो १० मेंबर हैं, उनके सिर पर यह अहंकार रहेगा कि हम दुनिया के उन ५०० में से हैं, वे यह नहीं सोचेंगे कि हम दुनिया में २०० करोड़ मनुष्यों में से हैं। इसलिए आप मेंबरशिप न बनाइये, यह मेरा एक सुझाव है,

सर्व-सेवा-संघ के साथ संपर्क रखें

दूसरा सुझाव यह है कि जो काम करनेवाली जमातें हैं, उनके साथ संपर्क रखा जाय। जैसे हिन्दुस्तान में सर्व-सेवा-संघ है, जो इस विचार पर प्रेक्टिकल (व्यावहारिक) काम करता है। वन वर्ल्ड (एक जगत्), जय-जगत् के विचार पर लोगों को इकट्ठा करता है। ऐसी जमातों के साथ आप करस्पांडेन्स (पत्र-व्यवहार) कीजिये। इस प्रकार की समस्याएँ दुनियाभर में होंगी, जो इन उसूलों को पसन्द करनेवाली हैं।

भारत से अपेक्षा

आपके विचार में एक बात यह है कि इंडिया (भारत) से ज्यादा अपेक्षा की गयी है। मैं नहीं मानता कि वह गलत है, वह ठीक ही है। इसमें अभिमान की बात नहीं है। इंडियन ट्रेडिशन (भारतीय परम्परा) ही ऐसा है, जिसके कारण भारत पर रिस्पान्सिबिलिटी (जिम्मेदारी) आती है। लेकिन मेरा मानना है कि जैसे कुछ कारणों से भारत को यह ज्यादा सधेगा, वैसे ही कुछ कारणों से इंग्लैण्ड को भी ज्यादा सधेगा। इंग्लैंड को इसलिए सधेगा कि उसने अपना इम्पिरिअलिज्म (साम्राज्यवाद) का दावा करीब-करीब छोड़ा है। यद्यपि कुछ प्रेशर (दबाव) से छोड़ा है, फिर भी उससे उसकी मारल पोजिशन (नैतिक स्तर) स्ट्रांग (दृढ़) बन गयी है। इंग्लैण्ड एक पावरफुल नेशन (शक्तिशाली राष्ट्र) है, वीक (कमजोर) नहीं। हम चाहते हैं—नानवायलेन्स आउट आफ स्ट्रेंथ, नाट आउट आफ वीकनेस (शक्ति में से अहिंसा का उद्भव हो, कमजोरी में से नहीं)। इसलिए संभव है कि आपके इस विचार को इंग्लैण्ड के लोग ज्यादा पसन्द करें। मेरा मानना है कि अमेरिका के लोग भी इसे ज्यादा पसन्द करेंगे। मेरा मानना तो यहाँ तक है कि अगर रूस में इस विचार को पसन्द करनेवाले लोग मिलें तो कोई आश्चर्य नहीं। कारण, दो प्रकार का एट्रेक्शन (आकर्षण) होता है। एक तो एक्स्ट्रीम (पराकाष्ठा) पर पहुँचने पर और फिर माइंड (दिमाग) बैलेन्स (सन्तुलन) में आता है, तब। इसलिए ऐसे बैलेन्स्ड माइंड (संतुलित दिमाग)वाले लोग आपको रूस में भी मिल सकते हैं। जर्मनी में और जापान में भी मिल सकते हैं। परन्तु हिन्दुस्तान की १० हजार साल की एक परम्परा है। हिन्दुस्तान के सारे इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता, जिसमें उसने जानबूझकर बाहर के किसी देश पर हमला किया हो। जबकि हिन्दुस्तान उत्कर्ष के शिखर पर था, तब भी अश्वमेध का घोड़ा हिन्दुस्तान में ही घूमता था, हिन्दुस्तान के बाहर नहीं। एक तरह से उन्होंने अपनी एक मर्यादा मान ली थी। यह हिंदुस्तान की

अपनी परम्परा है। गत १०० वर्षों के अन्दर हिंदुस्तान में स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, डा० एनीबेसेन्ट, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, राजा राममोहन राय, श्री अरविंद—ऐसे जो विचारक निर्माण हुए, वह एक गैलेक्सी नवयंत्रमाला है। वे कुल के कुल विचारक इस विचार के अनुकूल हैं कि दुनिया में निर्वैर हो, वैर न हो। इसलिए हिंदुस्तान के लिए जो आशा की जाती है, उसे मैं गलत नहीं मानता, परंतु मैं कहना यह चाहता हूँ कि उसपर ज्यादा जोर न दिया जाय।

किसीका एकाधिपत्य न रहे

हर देश में ऐसे लोग मिल सकते हैं। एक डिवाइन विल (दैवी इच्छा) काम करती है और वह विचित्र काम करती है। जिन लोगों में काशसनेस (ज्ञान) है कि "हम कुछ हैं", उनको कभी-कभी परमेश्वर छोड़ देता है और जिन्हें यह ज्ञान नहीं है, उन्हें उठा लेता है। इसलिए ऐसे लोग हिन्दुस्तान में ज्यादा होंगे, ऐसा मानने की जरूरत नहीं है। हर देश में परमेश्वर की कृपा से ऐसे लोग होते हैं, इसलिए आपके विचार में हिन्दुस्तान का टेरीटीरियलिज्म (एकाधिपत्य) न हो, यह सुझाना चाहता हूँ। ऐसा मैं इसलिए कहता हूँ कि अरविन्द के आश्रम के साथ वह चीज थोड़ी सी जुड़ी हुई है। सम्भव है कि वहाँ हिन्दू ज्यादा हों। इसलिए ऐसा हुआ हो। लेकिन हमारी सिविलाइजेशन (सभ्यता) का एक मिशन है। यह भाव हमने अपनी कई संस्थाओं में देखा है। श्री अरविन्द के आश्रम में देखा और यहाँ तक कि गुरुदेव की संस्था में भी देखा, जहाँ वह नहीं होना चाहिए। स्पिरिच्युअल फेलोशिप (आध्यात्मिक भातृत्व) के लिए यह सभ्यता का भाव ठीक नहीं है। इसलिए मैंने कहा कि वह जरा एक खतरे की जगह है कि हिन्दुस्तान के लिए एक खास बात मानें। यद्यपि हम वैसा मान सकते हैं; क्योंकि यह एक परम्परा है।

राष्ट्रीय अभिमान न रखा जाय

परन्तु सब काशस माइन्ड (अचेतन मानस) पर उसका असर हो सकता है। इसलिए मैं आपका ध्यान इस तरफ खींचना चाहता हूँ कि इसमें एक खतरा है। हिन्दुस्तान से ज्यादा यूरोप में उसकी भूख है, क्योंकि वहाँके लोग ज्यादा पीड़ित हैं। युद्धों के कारण उन्हें बहुत ज्यादा तकलीफ हुई है। इसलिए एक रिएक्शन (प्रतिक्रिया) के कारण उसका इधर झुकना सम्भव है। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि हमारी भूदान-यात्रा देखने के लिए बाहर के देशों से जो लोग आते हैं, वे इस आन्दोलन की ज्यादा प्रशंसा करते हैं। यहाँके लोग उसका अभिमान रखते हैं, लेकिन उसको कम एप्रिसिएट (प्रशंसा) करते हैं। यहाँके लोग पूछते हैं कि आपको पाँच करोड़ एकड़ जमीन हासिल करनी थी और सिर्फ पचास लाख ही हासिल हुई है। यहाँके लोग भूखे हैं, इसलिए इस निगाह से देखते हैं। लेकिन विदेशों से आनेवाले लोग कहते हैं कि आपको जो पचास लाख एकड़ जमीन मिली, उसका तरीका महत्त्व का है। इस तरह वे इस तरीके की प्रशंसा करते हैं। इसीलिए मेरा मानना है कि इसकी जितनी पासीबिलिटी (संभावना) हिन्दुस्तान में परम्परा के कारण है, उतनी ही यूरोप में परिस्थिति के कारण है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आपके निवेदन में से टेरीटोरी का फैक्टर (आधिपत्य-वाला मुद्दा) हम हटा दें।

मैंने तीन सुझाव रखे। १. मेंबरशिप न बनायें। २. सर्व-सेवा-संघ जैसी संस्थाओं के साथ कान्टेक्ट (सम्पर्क) रखें। ३. नेशनल इगो (राष्ट्रीय अहंकार) के लिए अवकाश न रखें।

भ्रातृत्व हो, सदस्यता नहीं

मुकर्जी : समाज राष्ट्र और विश्व के उत्थान के लिए व्यापकता और आत्मा का विकास मूल बात है।

विनोबा : आखिर में हमें व्यक्ति को बदलना है और उसके जरिये सारे समाज को। इसलिए यह जरूरी है कि व्यक्तिगत अनुभवों में हिस्सा बँटाना चाहिए। मैं व्यक्तिगत विचारों को महत्त्व नहीं देता, अनुभवों को देता हूँ। क्योंकि विचार परिस्थितियों के कारण बनते हैं। हम सब अपने अनुभवों में हिस्सा बँटायें और इस प्रकार एक भ्रातृत्व बने। मेम्बरशिप न बने।

स्मिथ : आप यह कहना चाहते हैं कि मेम्बरशिप डिफेक्टो (वास्तविक) हो ?

विनोबा : नहीं, कानूनी शब्द है कि वह डीज्योर (न्याय्य) भी हो।

मुकर्जी : ऐसी आत्माओं को और आध्यात्मिक प्रकाशों को खोजना तथा आध्यात्मिक संगठन खड़ा करना भी एक आवश्यकता है। हम उससे अपने भीतर शक्ति उत्पन्न करना चाहते हैं, ताकि आज वातावरण में जो अभावात्मक भाव-लहरियाँ भरी हुई हैं, उनके स्थान पर भावात्मक भाव-लहरियाँ भर सकें।

विनोबा : ठीक है। उपनिषदों में एक जगह जिक्र आया है कि ऋषिलोग 'ब्रह्मनिष्ठाः' 'ब्रह्मधराः' याने ब्रह्मनिष्ठ और ब्रह्मपरायण थे। इसके साथ और एक तीसरा विशेषण जोड़ दिया गया है—'परमब्रह्म अन्वेषमाणाः।' याने ब्रह्म से भी बढ़कर कोई परम ब्रह्म है, जिसकी खोज में वे लगे हुए थे। अर्थात् आज हमें जो अनुभव है, उससे बढ़कर एक और अनुभव है, जिसकी खोज करनी चाहिए। नही तो अक्सर वेदान्ती समझते हैं कि 'बस, यहीं तक, इसके आगे नहीं।' लेकिन यह गलत विचार है। जैसे विज्ञान की पद्धतियाँ अनन्त होती हैं, वैसे ही आध्यात्मिक पद्धतियाँ भी अनन्त हैं। इसलिए उपनिषदों ने कहा कि वे ऋषि ब्रह्मनिष्ठ तो हैं, किन्तु जो परमब्रह्म है, उसकी खोज में लगे हैं। उसकी खोज सबको करनी चाहिए।

स्मिथ : बाकायदा मेम्बरशिप न रखने में एक और भी गुण है और उसके कारण हम कम्युनिस्ट देशों में भी पहुँच सकते हैं।

विनोबा : हाँ, आप मनुष्य के पास पहुँच सकते हैं।

मुकर्जी : मैं रूस गया था। वहाँ मैंने देखा कि यद्यपि शासकवर्ग यह विचार जनता के मस्तिष्क में भरने की चेष्टा कर रहे हैं कि धर्म एक अफीम जैसी चीज है, जनता नव-जागरण के के किनारे पर खड़ी है और जीवन का आनन्द ले रही है। परन्तु वह पूछती है कि आखिर इसके बाद क्या ? एक बार उन लोगों ने मुझसे पूछा कि क्या आप अपना ईश्वर हमें दिखा सकते हैं ? मैंने कहा, 'हाँ।' मैं नहीं जानता कि मैं ऐसा कैसे कह गया ! जिस लड़की ने मुझसे यह प्रश्न किया था, उससे मैंने कहा, "मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या कोई लड़का तुम्हारा मित्र है ? क्या तुम उसे प्यार करती हो ?' वह बोली, 'हाँ'। तब मैंने उससे पूछा, 'यदि तुम मुझे उस लड़के को न दिखा सको तो क्या मैं यह इनकार कर सकता हूँ कि तुम उसे प्यार नहीं करती ?' तब वह बोली, 'यह तो भावना का मामला है।' मैंने कहा, 'वही बात ईश्वर के सम्बन्ध में है, तुम जितने गहरे उतरते जाओ !'

विनोबा : अनुभवों को मायाजाल कहकर एक ओर नहीं रखा जा सकता। किन्तु मैं समझता हूँ कि कम्युनिस्ट भी आधा-

त्मिक मूल्यों के खिलाफ लोगों की पंक्ति में शामिल होना पसन्द नहीं करेंगे। धर्म के विरुद्ध वे अवश्य खड़ा होना चाहते हैं।

चित्तशुद्धि और 'आधार'

मुकर्जी : गांधीजी चित्तशुद्धि पर बहुत जोर दिया करते थे। क्या उसका अर्थ आधार की शुद्धि है ?

विनोबा : 'चित्तशुद्धि' का अर्थ है हृदय की शुद्धि। गांधीजी जिस बात पर जोर देते रहे, वह है निरोधक के पहले शुद्धि होनी चाहिए। पतंजलि ने भी यही कहा कि पहले यम-नियम के द्वारा हृदय को शुद्ध करो, तब योग शुरू करो।

मुकर्जी : इस आन्दोलन में भी हमने चित्तशुद्धि पर जोर देने की चेष्टा की है। व्यक्ति 'आधार' है। जब तक वह शुद्ध और पूर्ण नहीं होता, तब तक समाज भी शुद्ध नहीं होता।

दोहरा आन्दोलन

विनोबा : दोहरा आन्दोलन चलना चाहिए : १. आत्म-शुद्धि की पद्धति और २. न्यूनतम व्यावहारिक कार्यक्रम के ऊपर समाज का एकत्रीकरण। यह कार्यक्रम इस प्रकार हो :

१. आध्यात्मिक ढंग पर जन-समूह का शिक्षण।

२. उनके जीवन में सहकार।

३. जिस प्रकार भी चाहें, उस प्रकार की प्रार्थना।

दर्शन का यह बोझ पसन्द नहीं कि 'राष्ट्र की आत्मा खोजनी चाहिए।' आप राष्ट्र से आरम्भ करते हैं। लेकिन मैं सोचता हूँ कि 'राष्ट्र' का यह विचार ही छोड़ देना चाहिए। 'राष्ट्रीय आत्मा' को खोजने की चेष्टा के बजाय हमें 'मानवीय आत्मा' को खोजने का प्रयास करना चाहिए। चूँकि विज्ञान बड़ी तेजी से प्रगति कर रहा है, इसलिए राष्ट्रीय आत्मा का यह विचार शीघ्र ही एक समस्या बन जायगा, जिसे हल करना ही होगा। भारत में हम देखते हैं कि लोग जहाँ प्रान्तीयता की बात करते हैं, वहाँ यही बात कहते हैं कि प्रत्येक प्रान्त की एक आत्मा होती है। प्रान्तीय आत्मा की तरह ही राष्ट्रीय आत्मा का विचार भी खतरनाक है। यूरोप प्रान्तीय आधार पर व्यवहार्यतः बँटा हुआ है। इसलिए राष्ट्र और राष्ट्रों की बात को छोड़ने की चेष्टा करिये।

हमें विश्वनागरिकता चाहिए

मुकर्जी : हम ऐसा करने की चेष्टा करेंगे। श्रीमाँ भारत और फ्रांस दोनों की नागरिकता चाहती हैं। कारण वे ऐसा महसूस करती हैं कि उनके लिए न तो कोई सीमा है और न कोई भूगोल है। सत्य का कोई भूगोल नहीं है तो ज्ञान भी भौगोलिक दृष्टि से कैसे बाँध रखा जा सकता है ?

विनोबा : वे दोहरी नागरिकता की बात करती हैं। लेकिन मुझे कहना चाहिए कि 'हम सबको विश्व-नागरिकता चाहिए।' एक ओर तो है व्यक्ति और दूसरी ओर है विश्व !

स्मिथ : श्री अरविन्द ने अपने 'वन्देमातरम्' में राष्ट्रीय आत्मा की बात कही है।

विनोबा : गांधीजी ने भी श्री अरविन्द की भाँति ही आदेश किया था। लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि श्री अरविन्द ने इसके पहले अनेक जन्म लिये थे। इस जन्म में भी उनके बहुत-से जन्म हुए। 'वन्दे मातरम्' में उन्होंने जो लिखा, वह अपने पूर्व जन्म में ही लिखा।

मुकर्जी : फिर भी कभी-कभी राष्ट्रीय जागरण के लिए व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय अभिमान का जागरण आवश्यक होता है।

विनोबा : यदि वह आवश्यक है तो हम लोगों के रहते हुए भी होगा। आजकल यह एक फैशन हो गया है कि दार्शनिकों के सम्पूर्ण ग्रन्थ छापे जायँ, जिससे पता चले कि उन्होंने किस प्रकार प्रगति की है।

पैगम्बर और संकुचितता

मुकर्जी : उपदेशक नहीं, उनके अनुगामी भी कहा करते हैं कि यह अन्तिम बात है। पांथिकता और संस्थागत स्वार्थ आध्यात्मिकता के लिए एक बाधा है। सभी उपदेशक दैवी मिशन को पूरा करने को आये। लेकिन हम अनुगामी उनकी बातों का अपने ढंग का अर्थ निकालने की चेष्टा किया करते हैं।

विनोबा : मुझे शक है कि अनुगामियों की संकुचितता से पैगम्बर भी पूर्णतः मुक्त नहीं किये जा सकते। कुछ मात्रा में वे भी उसके लिए जिम्मेदार हैं।

स्मिथ : ईसामसीह ने शुरू में धर्म-परिवर्तन के बारे में कुछ नहीं कहा।

विनोबा : तीसरे 'गोस्पिल' (धर्मोपदेश) की ईसाइयत चौथे 'गोस्पिल' की ईसाइयत से कुछ भिन्न है। 'पॉल' की ईसाइयत 'ईसा' की ईसाइयत से भिन्न है। सेण्टपॉल अहिंसा का सबसे हिंसक (जबरदस्त) समर्थक था।

स्मिथ : उसने कहा कि जो आदमी मुझसे भिन्न गोस्पिल का उपदेश देता है, वह पापी है। आप सत्याग्रह के भविष्य के बारे में बोले हैं और आपने 'सुप्रामेण्टल' (अतिमानस) स्तर की बात कही है, जिसने कि नया अध्याय ही खोल दिया है।

विनोबा : सत्याग्रह के विकास में यह बहुत ही आवश्यक है।

भूदान का अर्थ : सब कुछ बाँटें

मुकर्जी : मैं समझता हूँ कि भूदान का मतलब यह है कि हम हमारे पास जो कुछ भी है, उसे आपस में बाँट लें। केवल सम्पत्ति ही नहीं, आध्यात्मिक अनुभव भी।

विनोबा : आध्यात्मिक अनुभव की भी मालकियत का दावा हमें नहीं करना चाहिए।

सामूहिक मुक्ति और सामूहिक समाधि

स्मिथ : एक मित्र ने यह प्रश्न उठाया है कि सामूहिक 'साल्वेशन' (मुक्ति) जैसी कोई चीज ही नहीं है।

विनोबा : 'सामूहिक मुक्ति' अन्तिम स्थिति है। 'व्यक्तिगत मुक्ति' उसका प्रारम्भ है। जब तक हम सामूहिक मुक्ति के आदर्श की अनुभूति न करें, तब तक ऐसा मानना चाहिए कि हमने अन्तिम लक्ष्य की अनुभूति नहीं की है। विष्णुपुर (बंगाल) में, जहाँ श्रीरामकृष्ण परमहंस की सबसे पहले समाधि लगी थी, मैंने 'कलेक्टिव' (सामूहिक) समाधि की बात की थी।

सुरेन्द्रजी : आपकी कलेक्टिव (सामूहिक) समाधि और रामकृष्ण की समाधि के ढंग में क्या फर्क है ?

विनोबा : इन दो ढंगों में वही फर्क होगा, जो बिन्दु और सिन्धु में होगा। 'दि डिफरेन्स बिट्वीन दि ड्राप एंड दि ओसन।'

सुरेन्द्रजी : हम लोग सेवा पर जोर देते हैं तो क्या उसमें सेवा रहेगी ?

विनोबा : 'सेवा इज ए नेच्युरल कारोलरी, इट शुड बी म्यूचुअल' (सेवा उसकी एक स्वाभाविक अनुमिति है, वह पारस्परिक होनी चाहिए)। मैं आपकी सेवा करूँ और आप मेरी सेवा करें। अगर मैं आपकी सेवा करता रहूँ तो मैं सेवक बन गया और सेवक बनने का अहंकार मेरे सिर पर चढ़ जायगा। होना

तो यह चाहिए कि पैर में काँटा घुसने पर हाथ उसे निकाले। हाथ पाँवों की सेवा करता रहे, क्योंकि दोनों शरीर के जुज (अंग) हैं। अन्यथा गरीबों की सेवा भी एक बन्धन हो जाता है। 'सर्विस आफ दि पूअर आल्सो बिकम्स ए बान्ड।'

स्मिथ : अहंकार के लिए कोई भी ऐसी वस्तु नहीं, जिस पर आघात न हो सके।

सुरेन्द्रजी : क्या पाण्डिचेरी में भी अहंकार की संभावना है ?

विनोबा : वहाँ दूसरे प्रकार का अहंकार होगा।

प्रेम के प्रकार

स्मिथ : क्या प्रेम के भिन्न-भिन्न स्तर और प्रकार होते हैं ?

विनोबा : आप यह कहना चाहते हैं कि क्या हम क्रमशः प्रेम के मार्ग पर बढ़ें ? यदि उसमें क्रमिकता हो तो हम किस प्रकार आरम्भ करेंगे ? क्या आप इस प्रकार आरम्भ करेंगे कि माता-पिता को पहले प्रेम करना आरम्भ करें, फिर अपने पड़ोसी को आदि। यह खतरनाक है। यदि मुझे आरम्भ करना हो तो मैं यहाँसे शुरू करूँगा कि सबसे पहले अपने शत्रु को प्यार करूँगा।

स्मिथ : मेरे कहने का मतलब यह नहीं था कि हमारे प्रेम का लक्ष्य क्या हो ? मैं उस चेतना के स्तर की बात कर रहा था, जहाँसे उसका उद्गम है। उदाहरणस्वरूप पारिवारिक प्रेम। वह परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम का एक स्वाभाविक बन्धन है। नैतिक स्तर पर मनुष्यमात्र के लिए आशापूर्ण प्रेम और जिन लोगों में विश्व-कुटुम्ब की चेतना जागृत हो गयी है, उनमें विश्व-व्यापी प्रेम और करुणा। प्रेम को घृणा से भी बचकर रहना है और मोह से भी। ये दोनों खतरे के क्षेत्र हैं। प्रेम को दोनों की उपेक्षा करनी है। क्या आप यह महसूस करते हैं कि कम से कम रूस में मैं रूस और चीन के बीच भेद करता हूँ। वहाँ ऐसे मार्ग के लिए आशा है ?

विनोबा : मुझे बहुत ज्यादा आशा है।

स्मिथ : जयप्रकाश बाबू ने हम लोगों से पाण्डिचेरी में कहा था कि पोलैण्ड के लोगों में उन्होंने आध्यात्मिक क्षुधा देखी। फरवरी १९६१ में पाण्डिचेरी में विश्व-सम्मेलन हो रहा है। हमें बड़ी प्रसन्नता होगी, यदि आप उसमें पधारें।

मुकर्जी : चूँकि अभी उसमें बहुत देर है, इसलिए आपके लिए यह सम्भव हो सकता है कि आप उसमें उपस्थित हों।

विनोबा : हाँ, ऐसा सम्भव है। बहुत अच्छा हुआ, आप लोगों से मिलना हुआ। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) २-८-'५९

राजनीति के बदले लोकनीति की स्थापना करें

लगभग ५० साल पहले की बात है। मैं कॉलेज में पढ़ता था। मेरे दिल में तमन्ना पैदा हुई कि परमेश्वर की खोज में घर छोड़कर निकल पड़ूँ। कॉलेज में अध्ययन-क्रम तो चलता ही रहा। पर अन्दर यही ख्वाहिश जोर कर रही थी। आखिर घर छोड़कर परमेश्वर की खोज में मैं निकल ही पड़ा। १९१६ की बात है। उसे अब ४३ साल हो रहे हैं। फिर चंद दिनों बाद गांधीजी से संबन्ध आया। मैं उनके पास पहुँचा। परमेश्वर की तलाश में निकला और मैं पहुँच गया गांधीजी के आश्रम में। तब से जब तक गांधीजी जीवित रहे, मैं उनके साथ रहा। मेरी तमन्नाएँ पूरी हुईं। जब तक गांधीजी रहे, मैंने कताई, बुनाई, रसोई, पिसाई, सफाई आदि तरह-तरह के काम किये। साथ-साथ कुछ ध्यान भी किया। इस तरह से जिन्दगी के मेरे दिन बीते, ऐन जवानी के दिन बीते। अब गांधीजी की वफात के बाद महसूस हुआ कि मुझे देश में घूमना चाहिए और देहात के भाइयों के पास पहुँचना चाहिए।

मुझे अल्ला घुमा रहा है

गांधीजी को गये करीब ११ साल हो रहे हैं। आप सब जानते हैं कि इन ११ सालों में से आठ साल लगातार मेरी पदयात्रा में बीते हैं। इतनी लम्बी यात्रा के बावजूद भी मुझे किसी प्रकार की कोई थकान महसूस नहीं हो रही है। अंदर पूरा सुकून, इतमीनान है कि मैं ठीक रास्ते से जा रहा हूँ। सच तो यह है कि मैं नहीं जा रहा हूँ। कोई है, जो मुझे ले जा रहा है।

अभी जब बड़ा सैलाब आया हुआ था, हम पाँच-छह दिन के लिए मंडी राजपुरा में कैदी हो गये थे। सामने था पीरपंजाल पहाड़ ! जहाँसे महम्मद गजनी को वापस लौटना पड़ा। इसलिए कोई नहीं कह सकता था कि हम उस पहाड़ को लाँघ सकेंगे। गजनी ने हिन्दुस्तान पर १७ दफे हमला किया था। आखिर में जब उसने पीरपंजाल पर लोरेन के पास हमला किया, तब उसकी फौज के लोग मार भगाये गये। लोरेन के बहादुर लोगों ने उनके छक्के छुड़ा दिये थे; क्योंकि वह मुश्किल पहाड़ लाँघना उनके लिए नामुमकीन हो गया।

सामने पहाड़, इधर बारिश और उधर दौलत। तब हमने भगवान के सामने सत्याग्रह किया। वह सत्याग्रह हमने हमारे साथियों और जनरल यदुनाथ सिंह, जो कि हमारे साथ हैं और शान्ति-सैनिक बने हैं, के सामने जाहिर भी कर दिया। हमने कहा कि अगर यह पीरपंजाल हम लाँघ नहीं सके तो हम उसे ईश्वर का इशारा समझकर वापस पंजाब चले जायेंगे। हमने एक साल पहले जाहिर किया था, कि हमें कश्मीर जाना है। कुल हिन्दुस्तान और पाकिस्तान भी जानता था कि बाबा कश्मीर जा रहा है। फिर भी हम पीरपंजाल नहीं लाँघ सकते तो वापस लौट जाते। लेकिन आखिर बारिश कम हुई, आसमान खुला, हम फौरन निकल पड़े। यह सब क्यों हुआ ? इसलिए कि हम अल्ला के इशारे पर चलते हैं। आखिर उसीकी कृपा से हमारी यात्रा, इतनी तकलीफों के बावजूद भी जारी रही।

[चालू]

अनुक्रम

१. एक विश्व बनने के लिए तीन बातें जरूरी .
गुलमर्ग, १८ जुलाई '५९ पृष्ठ ५९३
२. राजनीति के बदले लोकनीति की स्थापना करें .
श्रीनगर, २ अगस्त '५९ „ ५९६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी